International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिन्दी साहित्य पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव

डॉ. पोरिका नागमणी

सहायक अद्यापिका (हिन्दी विभाग), शास्क्रीया स्नातक महाविध्यालय मुलुगु, मुलुगु जिला (506343) (T.S)

आधुनिक हिन्दी साहित्य की विधिवत शुरूआत १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हुई है और लगभग यही समय भारत में लुप्तप्राय बैद्ध धर्म के पुनर्जागरण काल का भी है। इस समय जेम्स प्रिंसेप और अलेक्जेन्डर कनिंघम जैसे पुरातत्वविदों और मैक्समूलर जैसे उदभट संस्कृत विद्वानों के सत्प्रयास से बैद्ध धर्म के तीर्थस्थलों, स्मारकों व पाली एवं संस्कृत वैद्ध साहित्य का पुनरुद्धार हुआ।

भारत में भी बैद्ध धर्म के इस पुनर्जागरण का श्रेय कुछ हद तक पाश्चात्य जगत को जाता है जिसने इसमें रुचि ली और कैद्ध धर्म से समन्धित स्थलों व साहित्य का परिष्कार किया। एक ओर ईसाई धर्म के प्रोटेस्टेंट मत वाले ब्रिटेन ने बैद्ध धर्म के 'सुधारवादी रूप स्थाविरवाद (भैरवदाव) में अपनी रुची दिखाते हुए अपने अधीनस्थ श्रीलंका के स्थविरवाद बैद्ध धर्म के पाली ग्रंथों को प्रकाशित किया तो दूसरी ओर कैबेलिक मतानुयायी फ्रांस एवं इटली के विद्वानों ने चीन , जापान एवं तिब्त में उपलब्ध महायान सूत्रों और भाष्यों में अपनी रुचि दिखायी। ओल्डेन गं. रिज़ डेविड्स , रत्वेरबदरकी जैसे बैद्ध विद्वानों के प्रयत्नों संस्कृत एक्पाली ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुई तथा बैद्ध धर्म के महत्वपूर्ण तथ्यों और साहित्य से बहा जगत को अवगत कराया। एडविन आर्नाल्ड , सोपेनहावर तथा हर्मन हेसे जैसे दार्शनिकों और साहित्यकारों अपनी रचनाओं के विषय वस्तु के रूप में बुद्ध और बैद्ध दर्शन को ग्रहण कर उसकी मुक्तकंठ प्रशंसा की।

बैद्ध धर्म के इस पुनर्जागरण ने हिन्दी जान-मानस को भी प्रभावित किया। ईश्वरवाद और आत्मवाद के अनिच्छुक इस धर्म दर्शन के समन्वयवादी रूप ने आधुनिक हिंदी साहित्य को एक नयी स्फूर्ति और चेतना दी लेकिन फिर भी एक बद स्पष्ट है कि आरंभिक दौर के आधुनिक हिंदी युग के कवि और रचनाकारमले ही अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में कुछ प्रेरणा ली हो पर उनकी रचनाओं पर बैद्ध दर्शन के मूलभूत दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रभाव अत्यंत अल्प था और जो कुछ भी दार्शनिक पृष्ठभूमि इनके रचनाओं में परिलक्षित हुई वह बैद्ध धर्म के तुलना में बैद्ध दर्शन से कुछ हद तक साम्यता रखने वाले औपनिषदिक दर्शन के अधिक निकट थी। इसका एक प्रत्यक्ष कारण तो यह था कि उस समय में बैद्ध दर्शन के मूलभूत ग्रंथों की अनुपलब्धता थी।

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में मैथिलीशरण गुप्त , रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नंदन पंत, महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायान, 'अज्ञेय', यशपाल, रांगेय राघव और मोहन राकेश की कुछ रचनायें बैद्ध दर्शन से प्रत्यक्षतः संबंध रखती है।

वरिष्ठ आलोचक रामचंद्र शुक्ल ने एडविन आर्नाल्ड द्वारा रचति 'द लाईट आफ एशिया का अनुवाद 'बुद्धचरित' नाम से किया है जो मूलतः बुद्ध के जीवन की एक रूप-रेखा प्रस्तुत करती है। कैद्ध धर्म से संकत प्रारंभिक रचनाओं में गुप्त जी की 'यशोधरा' एक प्रमुख कृति है जो बुद्ध की पत्नी यशोधरा के नारी मन की सविस्तार करुण-गाथा है।

छायावादी चिंतनधारा के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक राजश्री , विशाखा, आजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त तथा सम्राट कनिष्क के घटनाक्रम उन सम्राटों से संबंधित है जिन्होंने धर्म को राज्यश्रय दिया। इनके साहित्य में बैद्ध धर्म के सिद्धांत यत्र-तत्र मिलते है व्यक्ति निर्वाण की अपेक्षा समष्टि हित पर अधिक बल देकर इन्होंने बैद्ध धर्म के महायान परंपरा वाले दर्शन को अपनाया है। इनकी रचनाओं में संसार के संघर्षों से विरक्त होकर संसार त्याग का उददेश न होकर निष्काम भाव से कर्मरत रहने की प्रेरणा है। महादेवी वर्मा की रचनाओं में बैद्ध धर्म के दुखवाद और करुणा के सिद्धांत का प्रभावरपष्ट रूप में देखा जा सकता है।

चिंतन और सृजन के विलक्षण प्रतिभा वाले हजारी प्रसाद द्विवेदी के दो उपन्यासों , बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'चारु चंद्रलेखा' की कथा-वस्तु बैद्ध धर्म के तांत्रिक रूप से संबंधित है। बणभट्ट की आत्मवधा के अंतिम भाग में द्विवेदी जी ने बैद्ध आचार्य सुगतभद्र के वार्तालाप के माध्यम से तत्कालीन बैद्ध धर्म का तत्रोत्रमुखी रूप दिखलाया है। चारू चंद्रलेख की कथा वस्तु का काल 'बणभट्ट की आत्मकथा' के परवर्ती युग का है जा बैद्ध दर्म का तांत्रिक संप्रदाय चर्मोत्कर्ष पर था , जो इस उपन्यास की कथा वस्तु का एक बडा भाग है।

अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य के उन चंद रचनाकारों में से हैं जिन्होंने वैद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों को गहराई से समझा है। 'असाध्य वीणा' और 'आंगन के पार-द्वार' की रचनाओं पर बैद्ध दर्शन का स्पष्ट प्रभाव है। इन्होंने 'उत्तरप्रियदर्शी' नामक एक काव्य नाटक की रचना भी की है जो अशोक के

कलिंग विजय के बद के घटना क्रमों पर आधारित है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपने दो उपन्यास 'सिंह सेनापति' तथा "जय यौधेय की कथावस्तु में बैद्ध मतो का साम्यवादी विचारधारा के साथ समन्वय किया है।

क्रांतिकारी एवं मार्क्सवादी चिंतक यशपाल के ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' की कथा वस्तु हर्षवर्धन काल से संबंधित है। भौतिकवादी दर्शन पर आधारित इस उपन्यास में पतनोन्मुख बैद्धकालीन समाज का चित्रण है । 'अमिता' यशपाल का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है जो अशोक के कलिंग विजय पर आधारित हैं। यशपाल ने अपने इन दोनों उपन्यासों में मूलतः राजनितिक और सामाजिक मुद्दों की ही चर्चा की है। प्रगतिशील कथा-साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभ रांगेय राघव ने अपने दो ऐतिहासिक उपन्यासों में वैद्धकालीन घटनाओं को अपनी कथा का विषय बनाया है। "यशोधरा जीत गई' में रांगेय राघव ने युद्ध और यशोधरा का माध्यम जाते हुए नारी जीवन धर्म को तत्कालीन परिस्थितियों का ऐतिहासिक दृष्टिकौम से विवेचन किया है।

समकालीन हिन्दी साहित्य पर भी बैद्ध धर्म का प्रभाव दिख रहा है। हिन्दी पत्रिकाओं में स्थापित व नए रचनाकारों की रचनाओं में यदाकदा बुद्ध से समन्धित घटनाओं या वैद्ध दर्शन की झलक मिल जाती है। हाल में ही प्रकाशित कवि केदारनाथ सिंह के काव्य संकलन 'तोलसतोय व साइकिल' की कविता 'बुद्ध' से उल्लेखनीय है।

स्वातंत्रोत्तर भारत में सामाजिक और राजनितिक नवजागरण, जवाहारलाल नेहरू के सत्प्रयास व लोहिया और अंबेडकर के विचारों के कारण बैद्ध धर्म एक बर फिर चर्चा में आया है। अंबेडकर की चिन -शैली तथा उनकी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धर्म वैद्ध धर्म की नई आवधारणा प्रस्तुत करती है। यद्यपि अडकर स्वयं बैद्ध धर्म के कई मूलभूत सिद्धांत , जैसे चार आर्य सत्य के प्रति अपनी शंका प्रकार करते हैं फिर भी द और बैद्ध धर्म के मानवीय दृष्टिकोण से अत्यंत प्रभावित है। अडकर ने बैद्ध धर्म को नए सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है जिससे जड़तावादी विचार व्यवस्था को तोड़ने की प्रेरणा मिलती है तथा दलित विमर्शी साहित्य के अधिकांश हिन्दी रचनाकार इससे प्रेरित हुए हैं।

प्रत्यक्षतः हम यह कह सकते हैं कि बैद्ध धर्म दर्शन से हिन्दी साहित्य धारा से एक नई गति मिली है , फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि यह धारा वर्तमान राजनीतिक प्रभाव से अछूती रही है। बेद्ध दर्शन के मूल स्वर की उपेक्षा कर यह साहित्य धारा युद्ध के दर्शन के बुनियादी सामाजिक व

मानवीय सैद्धांतिक मूल्यों को नकारती रही है। बैद्ध धर्म के इस पक्ष की ओर अभी हिन्दी साहित्कारों की दृष्टि सामान्यतः नहीं गयी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिन्दी साहित्य का संप्ति इतिहास विश्वनाथ त्रिपाठी (एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली संस्करण 1986
2. हिन्दी साहित्य कोश संपादक धीरेन्द्र वर्मा (ज्ञानमंडल, वाराणसी, संस्करण 1980)
3. महादेवी संपादक इंद्रनाथ मदान, (राधाकृष्ण, दिल्ली, संस्करण 1973)(
4. स्कंदगुप्त जयशंकर प्रसाद (राजकमल, दिल्ली 1994)
5. चंद्रगुप्त जयशंकर प्रसाद, (अनुपम, पटना 2006)
6. राहुल सांकृत्यायन एवं कृतित्व संपादित (अलका प्रकाशन, कानपुर 1995)